

विचार बिन्दु

जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं करता और क्षमा कर देता है। वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है। -वेदव्यास

गर्मी हाथ गर्मी उर्फ मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की!

हमारे देखते-देखते कितना कुछ बदल गया है! एक जमाना वह था जब किसी के घर में टेबल फ्रैन होना भी उसके अमीर होने का परिचायक होता था। मुहल्ले में किसी-किसी घर में ही पंखा होता था। फिर वह समय आया जब अमीरों के यहां खस की टट्टियां लगने लगीं। उनकी तो बात ही अलग थी। हरेक की पहुंच में यह विलासिता थी ही नहीं। फिर दौर आया कूलर का। घर के बाहर किसी की खिडकी में कूलर नजर आता तो देखने वालों की निगाह में गृह स्वामी का कद कुछ और बढ़ जाता। फिर आहिस्ता-आहिस्ता कूलर आम होने लगे और मुहल्ले के अमीर चौथाई परिवारों के पास एसी है। बताया जा रहा है कि भारतीय बाजार एसी का दुनिया में सबसे ज्यादा तेजी से बढ़ता बाजार है, और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 2045 से 2050 तक आते-आते भारतीय बाजार उस चीन को पीछे छोड़ चुकेगा जिसे आज उसके नौ करोड़ एसी के कारण दुनिया का सबसे बड़ा एसी बाजार माना जाता है। वर्ल्ड एनर्जी आउटलुक ने बताया है कि अभी भारत में जो एसी बेचे जा रहे हैं उनमें से नब्बे प्रतिशत से ज्यादा के ग्राहक वे हैं जो अपने जीवन का पहला एसी खरीद रहे हैं। यही नहीं, एसी की पहुंच अब महानगरों की सीमाओं को लोंच कर छोटे शहरों तक जा पहुंची है। देश की कुल एसी बिक्री का करीब पैंसठ प्रतिशत टियर 3, 4 व 5 के शहरों में हो रहा है।

एसी को लेकर भारतीयों की मानसिकता में भी बहुत बड़ा बदलाव आया है। शुरू-शुरू में लोग कहते थे कि हमें तो एसी सूट नहीं करता है। उनका तर्क यह होता था कि एसी की शीतलता से तेज गर्म माहौल में निकलने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। एसी से गुरेज का एक बड़ा कारण, भले ही उसे कहा नहीं जाता था, उस पर होने वाले बिजली के भारी खर्च का आतंक भी था। सारी कार्र भी कहां एसी युक्त होती थीं? सिनेमा घरों तक में कूलर का होना भी बड़ी बात थी। सिनेमा घरों के विज्ञापनों में सर्वत्र 'एयर कूल्ड' लिखा जाता था। यह कितना मजेदार था कि पर्दे पर बोले जा रहे संवादां और कूलर की घड़-घड़ आवाज के बीच सतत प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी और इसके बावजूद हम कूलर की ठण्डी हवा का आनंद लेते थे। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। अब एसी का होना भी दिखावे और गर्व का विषय नहीं रह गया है। गर्मियों में तो हालत यह होने लगी है कि दुकानदार आपको एसी बेच कर आप पर उपकार करते हैं। अब गरज दुकानदार को नहीं खरीददार को है। चालीस-पचास हजार के इस उपकरण के लिए भी कई बार आपको प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यह है एसी की डिमाण्ड का ताजा हाल। आम जन अक्सर कहते हैं कि इस साल जैसी गर्मी पहले कभी नहीं पड़ी। और यह बात तथ्यात्मक रूप से भी सही है। तापमान हर बरस थोड़ा-थोड़ा बढ़ता जा रहा है, और यह बात कहने की जरूरत नहीं है कि चालीस डिग्री सेल्सियस के बाद एक डिग्री तापमान का बढ़ना भी आपको बहुत अखरने लगता है। पता नहीं क्यों हम इस बात की अनदेखी करते हैं कि अपने लिए ठंडक का इंतजाम करके हम अपने चारों तरफ की गर्मी में वृद्धि करने का अपराध भी कर रहे हैं। अगर चाहें तो आप कुछ देर के लिए ही सही, एसी के कम्प्रेसर के पास खड़े रहकर मेरी बात की सत्यता का अनुभव कर सकते हैं। इस तरह एक भयंकर दुष्कर बनता जा रहा है।

हमें गर्मी महसूस होती है इसलिए हम एसी लगाते हैं, एसी गर्मी बढ़ाता है, इसलिए हम और एसी लगाते हैं, वे और गर्मी बढ़ाते हैं, इसलिए हम और एसी लगाते हैं। और इसी दुष्कर की परिणति यह भी है कि एसी का बाजार खूब फल-फूल रहा है। यह तो एक बात हुई। अब दूसरी बात की तरफ भी ध्यान दें। ठंडक देने वाले अन्य उपकरणों जैसे- पंखों, कूलरों आदि की तुलना में एसी अधिक बिजली खाते हैं। तो एसी के बढ़ने का सीधा असर हमारे विद्युत उपभोग पर पड़ रहा है। एक आकलन के अनुसार भारत में ठंडक देने वाले उपकरणों पर देश के कुल विद्युत उपभोग का दस प्रतिशत खर्च हो रहा है। गौर तलब यह बात है कि यह हिस्सेदारी सन् 2019 की तुलना में इक्कीस प्रतिशत बढ़ी है। और कहना अनावश्यक है कि जैसे-जैसे हम ज्यादा एसी का उपयोग करने लगेंगे उनके कारण हमारा विद्युत उपभोग भी उसी अनुपात में बढ़ेगा। भले ही स्टार रेटिंग की वजह से इन उपकरणों पर अब पहले की तुलना में कम विद्युत खर्च होने लगी है, इस बचत को एसी की ज्यादा खपत निरर्थक किए दे रही है। दूसरी बात, जिस पर आम जन तो बहुत दूर की बात है जो जानकार और समझदार हैं, वे भी ध्यान नहीं देते हैं, यह है कि एसी में प्रयुक्त होने वाला हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) ओजोन परत के लिए बहुत घातक है। भले ही भारत ने एचएफसी को क्रमशः कम करने के लिए मॉणिट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर कर रखे हैं, बात औपचारिकता से बहुत आगे नहीं बढ़ी है और हम अनजाने में ही सही एसी का अंधाधुंध उपभोग कर ओजोन परत को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ओजोन परत के विदीर्ण होने से क्या नुकसान होते हैं, यह अलग से और विस्तार से चर्चा का विषय है। यहां इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि यह क्षति प्राण घातक है। लेकिन हम इसके प्रति सजग नहीं हैं।

इन सारी बातों के बीच हमारे ही देश के एक शहर की एक कॉलोनी की खबर आई है। ताममहल के लिए विख्यात आगरा शहर में एक कॉलोनी है दयाल बाग। यह आगरा शहर की एक पॉश कॉलोनी है, जहां संपन्न, शिक्षित और सम्पन्न लोग रहते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस कॉलोनी के एक भी घर में एसी नहीं है। जो भी घर में एसी नहीं है, जिससे वातावरण नियंत्रण में रहता है। तो, एक वे हैं जो पेड़-पौधों के सहारे बगैर एसी के बहुत आराम से जी रहे हैं और एक हम हैं जो पेड़ों को काट कर कंक्रीट के जंगल खड़े कर रहे हैं और फिर तपन से निजात पाने के लिए एसी लगाते हैं और फिर उस एसी के कारण बड़ी हुई गर्मी से राहत के लिए एक और एसी लगाते हैं!

इस हालत को देख वह पुरानी कहावत याद आए बगैर नहीं रहती है- मर्ज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की। हम खुद अपनी मुसीबत बढ़ा रहे हैं!

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



दशरथ कुमार सोलंकी

यह विचार अचानक ही आया था। ऑफिस में कोई बैककमी मिलने आए थे। स्वभावतः आते ही उन्होंने अपना विजिटिंग कार्ड मेरे सामने किया। उस दिन सुबह ही मैंने कागज पर चिंतन करते हुए कुछ लिखा था। पेड़ से बनता है कागज। अर्थात् किसी भी रूप में कागज प्रकृति के विनाश का ही एक परिणाम है। विजिटिंग कार्ड भी तो अधिकतर कागज से बना होते हैं! पेड़ कटते हैं, कई जगह प्रयुक्त भी होते हैं। प्रगति के पथ के लिए कई बार पेड़ों को काटना आवश्यक हो सकता है। पर यदि उपयोग की सीमा हो और इस विनाश के परिणामस्वरूप कुछ सुजित होता हो तो न्यूनतम सीमा तक पेड़ काटे जाने को उचित ठहराया जा सकता है। फर्नीचर, औद्योगिक उपयोग या कि कागज, इन सबके लिए वनस्पति प्रयुक्त होती है। सब आधुनिकता के उत्पाद, प्रगति के पैमाने... और उत्सर्ग पेड़ का!

पेड़ कटा, कागज बना। उस पर किसी कवि ने कोई कविता लिखी पेड़ पर, प्रेम पर, संवेदना पर, मानवता पर, उसे पढ़कर भले मानुसों ने कुछ पेड़ लगाए। कविता साफ़ क हुई, पेड़ का बलिदान व्यर्थ न गया। नरेश सक्सेना जी ने अपनी कविता में लिखा था -

लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में कि बिजली के दाहधर में हो मेरा अंतिम संस्कार ताकि मेरे बाद एक बेटे और एक बेटे के साथ एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में। पर कविताओं में जो लिखा होता, वह घटता नहीं। पेड़ बचाने और पेड़ पनपाने के प्रयास यदि होते हैं तो वे रंग क्यों नहीं लाते? पचास के पास पारा क्यों पहुंचता? मौसम असंतुलित क्यों होते? आपदाएँ इस तरह अचानक और भयानक रूप ले क्यों आती? धरती हरी भरी और नभ निरभ्र क्यों नहीं? पवन में कौनसा विष घुला है कि हर सांस में बीमारी काया में प्रवेश कर जाती? नदियाँ सूखी क्यों हैं या सैलाब की शक्ल क्यों ले रही? क्यों त्यागा उन्होंने कलकल गान, कूड़े कर्कट में फँसी है उनकी भी तो जान! तो बात इतनी सी है कि समस्यार्थ काटें पर गया, जो लोगों ने मुझे दिए मेरे किसी काम के नहीं थे वे हैं, कभी उन पर लिखे मोबाइल नंबर अवश्य काम आते, पर उसके लिए कार्ड को लेना देना कहीं जरूरी है? नंबर मोबाइल में सहेजे जा सकते हैं। कार्ड की उपयोगिता इतनी भी नहीं। बस, स्टैस सिम्बल की मानसिकता से बाहर आने की जरूरत है मात्र। तो इसी भाव प्रवाह में मैंने उन बैककमी के नंबर नोट किए, उन्हें उनका विजिटिंग कार्ड लौटा दिया। यह कहकर, कि यह कार्ड और कहीं काम आ जाएगा। यह भी, कि यदि संभव हो तो भविष्य में आप कार्ड मत छपवाना। कार्ड न छपवाकर आप पेड़ या उसकी एक डाली बचाएँ। एक पेड़ बचाना तो हमारी साँसें बचेंगी। गौरैया, गिलहरी बचेगी। छाँव बचेगी, ऋतुएँ बचेगी, उनमें वसंत भी बचेगा। प्रेम और संवेदना बचेगी।

यद्यपि कुछ संस्थाओं और कंपनियों द्वारा रीसाइक्लिंग से विजिटिंग कार्ड बनाये जाने को प्राथमिकता दी जाती है, इसलिए उस स्थिति में पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। यह उचित भी है, परंतु सर्वाधिक उचित तो यह होगा कि हम विजिटिंग कार्ड को प्रयुक्त ही न करें। रीसाइक्लिंग भी अंततः कोई मशीनी प्रक्रिया ही है। प्राचीन तिब्बती संस्कृति में ऐसी मान्यता थी कि यंत्रों के घर्ष घर्ष नाद से देवताओं को पीड़ा पहुंचती है। यह कोई आसमानी देवता नहीं, प्रकृति की उजास के झिलमिलाने देवता हैं ये, अनंत शांत निसर्ग से आशीष बन झरते देव हैं वे। हमारे प्राणों की हेतु प्रत्यक्ष प्रकृति, इसी में समाहित समस्त देवत्वा यंत्र मनुष्य की प्रगति और आधुनिकता के वाहक है, पर प्रकृति से सामंजस्य के साथ मशीन का अल्प व आवश्यक उपयोग ही मानवता को शांति और सुकून दे सकेगा। विजिटिंग कार्ड एक शुरुआत भर है, अंततः मानवता को वहाँ पहुंचने का भाव धारण करना चाहिए जहाँ मनुष्य के किसी भी कार्य से परेशान ही असौम्य शांति भंग न हो। ऐसी ही चाह पर कविता बनी थी, उसका एक अंश इस तरह है -

आवाज़ से खलल पड़ता है निसर्ग की शांति में इसलिए मौन साधना चाहता हूँ मैं जब से महसूस किया मैंने मेरी उपस्थिति से अवरुद्ध होती हवा की गति अपनी अनुपस्थिति की प्रार्थना करने लगा हूँ प्रभु से एक परछाईं जितनी लम्बी धूप को भी रोका मैंने जब-तब किण्वों ने तो कोई शिकायत नहीं की पर मेरी लज्जा घनीभूत न हो इतना कृतघ्न कैसे हो सकता था

? जहां खड़ा हुआ मैं, बैठा कुछ माटी दबी होगी रजकणों ने जतलाया फिर भी नहीं कोई अहसान मेरी प्यास के हवाले कितना पानी हुआ होगा जीवनभर किसके हिस्से की नमी सोखी होगी मैंने रुक्षताओं का भागी बना इस तरह एक टुकड़ा आसमान जब से मेरे हिस्से आया अनंत शून्य के विखंडन का उत्तरदायी बना मैं क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर सबके अस्तित्व पर मेरी छाया रही है मेरी काया के आकार से, भार से दिया कम, अनंत गुणा करता रहा हासिल आज से चेतना के सारे अर्थ तुम्हारे हवाले आत्मा के सारे अंश समर्पित तुम्हें मन के प्रपंच जो हैं बहुतेरे, वो मेरे पर उसके उजास के निहितार्थ तुम्हें सौंपता हूँ काया किंचित उद्देश्यों के लिए बचाए रखता हूँ अभी असौम्य अवदानों से उन्मत्त हो जाऊँ जब आना तुम सब देह की नश्वरता पर अपने हस्ताक्षर मांड जाना... उस दिन के लिए मैं लिखकर बचना चाहता हूँ अनंत के सामीप्य का

मधुरकाव्य ताकि विछोह का शोकगीत न बांचे कोई... एक पेड़ लगाणा हम सबका दायित्व है। एक पेड़ को प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से बचाना इसी दायित्व का भाग है। हमें पता करना चाहिए, कैसे पेड़ बच सकते हैं। ऑफिस कागजवहति हो रहे, कविता सीधे ही स्क्रीन पर टाइप होकर सुरक्षित हो जाती। ठीक है कि कुछ नुकसान होंगे कंप्यूटर मोबाइल के, पर लाभ भी तो अनगिनत है। संख्यात्मक और बौद्धिक लाभ छोड़ भी दें तो मुझे इनका सबसे बड़ा लाभ यह दिखता है कि इन्होंने कागज पर हमारी निर्भरता कम की है। मैं पेड़ के प्रेम में हूँ, प्रकृति मेरे स्वभाव में समायी है, तो मेरा सारा गुणा-भाग या चिंतन पेड़ के परिप्रेक्ष्य में ही रहता। इसलिए पेड़ लगाने और पेड़ बचाने के हर विकल्प को अपनाने की ओर हमें अप्रसर होना ही पड़ेगा। विजिटिंग कार्ड से मुक्ति पेड़ों को विनष्ट होने से बचाने का एक छोटा सा विकल्प है। वस्तुतः यह मानसिकता के रूपांतरण का ही एक प्रकल्प हो सकता है। यह एक प्रस्थान बिंदु की तरह है। मैंने उन बैंक वालों को समझाया, समझ गए वे मैं हर उस आर्ग्युमेंट को यह समझता हूँ, जो विजिटिंग कार्ड आगे करता है। वह समझ जाता है। एक संकल्प को उसकी दृष्टि में उतरते हुए देखा हूँ संकल्प, कि वह अब नहीं छपाएगा ऐसे कार्ड, जिससे प्रकृति की पुलक पर चोट पहुंचे। मोबाइल नंबर तो मैं दिये जा सकते हैं। स्टैटस कार्ड से नहीं, व्यवहार और कर्म से निर्मित होगा, यह समझना मन में सुकून उत्पन्न करता है। एक पेड़ को बचाने के लिए आइए, विजिटिंग कार्ड भी ऑफिस की कल्पना को अपने संकल्प से साकार करें। विजिटिंग कार्ड को 'ना' कहें। -दशरथ कुमार सोलंकी, निदेशक वित्त जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

1980 से लेकर अभी तक क्रमोन्नत नहीं हुआ अड्डा गांव का प्राथमिक स्कूल

एक दशक से स्कूल को सीनियर सैकेंडरी स्तर तक क्रमोन्नत करने की मांग कर रहे हैं ग्रामीण

सुरौठ, (निसं)। तहसील के समीपवर्ती नहरा क्षेत्र के सबसे बड़े गांव अड्डा में स्थित राजकीय प्राथमिक स्कूल 44 साल बाद भी क्रमोन्नत नहीं हो पाया है। पिछले एक दशक से ग्रामीण लगातार स्कूल को सीनियर सैकेंडरी स्तर तक क्रमोन्नत करने की मांग कर रहे हैं, लेकिन सरकार और प्रशासन के स्तर पर कोई सुनवाई नहीं हो पा रही है। करीब तीन हजार की आबादी वाले अड्डा गांव में केवल राजकीय प्राथमिक स्कूल होने से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, जिससे ग्रामीणों में रोष व्याप्त है।

स्थानीय ग्रामीण साहब सिंह गुर्जर अड्डा, पूर्व सरपंच मानसिंह, उपसरपंच

- करीब तीन हजार की आबादी वाले अड्डा गांव में केवल राजकीय प्राथमिक स्कूल होने से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है
- पांचवी कक्षा के बाद गांव के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए दो किलोमीटर दूर दूसरे गांव में जाना पड़ता है
- विशेषकर बालिकाएं पांचवी के बाद स्कूल नहीं होने से मजबूरी में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं

राजहंस पहलवान नरोत्तम तंवर ने बताया कि पांचवी कक्षा के बाद गांव के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए 2 किलोमीटर दूर दूसरे गांव में जाना पड़ता है इससे छोटे बच्चों को परेशानी होती है। विशेषकर बालिकाएं पांचवी

के बाद स्कूल नहीं होने से मजबूरी में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं एक तरफ तो सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कर दूसरी ओर मजबूर पढ़ाई छोड़ने को मजबूर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि गांव अड्डा में

राज्य सरकार ने 1980 में राजकीय प्राथमिक स्कूल स्थापित किया था। जिसे अभी तक क्रमोन्नत नहीं किया गया है, जबकि इसके बाद खुले कई स्कूलों को काफी पहले ही क्रमोन्नत किया जा चुका है। ग्रामीणों ने बताया कि गांव की आबादी को देखते हुए अड्डा में राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल होना बहुत जरूरी है। गांव के राजकीय प्राथमिक स्कूल को क्रमोन्नत करने की ग्रामीण लंबे समय से मांग कर रहे हैं लेकिन अभी तक राज्य सरकार ने उनकी सुनवाई नहीं की है। इस दौरान ग्रामीण अलरूप सिंह, पूर्व सरपंच मानसिंह, पूर्व सरपंच कल्याण सिंह,

दाताराम, शिवदयाल सैन, किरोड़ी सैन, भगवान सिंह पटेल, कन्हैया पटेल, राधे गोठिया, समय सिंह, रती, खैमीसिंह, महाराज सिंह आदि मौजूद रहे। ग्रामीणों ने बताया कि स्कूल को क्रमोन्नत करने के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, शिक्षा मंत्री महान दिलावर, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेडम, स्थानीय विधायक बहदुर सिंह कोली से राजकीय प्राथमिक विद्यालय अड्डा को सीनियर सैकेंडरी स्कूल में क्रमोन्नत करने की गुहार लगाते हुए ग्रामीणों ने चेतावनी देते हुए सात दिवस में विद्यालय को क्रमोन्नत करने की मांग की है।

पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने मटकियां फोड़ प्रदर्शन किया

मालपुरा, (निसं) नगरपालिका शहरी क्षेत्र के अजमेर रोड आवासीय कॉलोनी में पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने विभाग की लापरवाही को लेकर रविवार को मालपुरा-अजमेर सड़क मार्ग पर सीआईडी ऑफिस के सामने कंटोली झाड़ियां लगाकर जाम लगाकर प्रदर्शन किया। आवासीय कॉलोनी की महिलाओं ने बीच सड़क पर मटकियां फोड़ प्रदर्शन करते हुये मौके पर पहुंचे अधिकारियों के समक्ष अपनी पीड़ा बयां की। महिलाओं ने बताया कि पालिका शहरी क्षेत्र में लाखों रुपये की लागत से आवासीय पकान बनाकर विभाग के नियमानुसार नल कनेक्शन लेकर समय पर बिल का भुगतान करने के बावजूद भी भीषण गर्मी में पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है। महिलाओं ने बताया कि दूर-दराज से पानी लाकर अथवा मुंह मांगे दामों में पानी के टैंकर डलवाकर रोजमर्रा के कार्य करने पर विवश होना पड़ रहा है। यहां तक कि कई आवासीय कॉलोनिनों



मालपुरा के अजमेर रोड पर पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने जाम लगाया।

में तो विभाग द्वारा लाईनें तो डाली गई लेकिन उनमें सुचारू पेयजल आपूर्ति की व्यवस्थाएं नहीं की गई। लम्बे समय से पानी की समस्या को लेकर जलदाय विभाग के अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो सका है। महिलाओं ने बताया कि पानी

जैसी मूलभूत सुविधा के लिये उन्हें भटकना पड़ रहा है। शहरी क्षेत्र में नौ करोड़ रूपयों की लागत से नवीन टंकियों का निर्माण व पेयजल की नई लाईनें डालने के बावजूद आवासीय कॉलोनिनों में सुचारू पेयजल आपूर्ति नहीं होना कई तरह के सवालों को जन्म दे रहा है। करोड़ों रुपये खर्च होने व शहर

में 6 टंकियों बनने के बावजूद पेयजल समस्या का समाधान नहीं होना किसी बड़े आश्चर्य से कम नहीं है। वहीं मुख्य सड़क पर जाम लगाने से सड़क के दोनों ओर वाहनों की लम्बी कतारें लग गईं। पुलिस अधिकारियों की समझाईश पर भी महिलाओं ने जाम नहीं हटाया। मौके पर पहुंची जलदाय विभाग

- आवासीय कॉलोनी की महिलाओं ने मौके पर पहुंचे अधिकारियों के समक्ष अपनी पीड़ा बयां की
- मौके पर पहुंची जलदाय विभाग की कनिष्ठ अभियंता ने महिलाओं को समस्या के समाधान का आश्वासन दिया

की कनिष्ठ अभियंता हंसा चौधरी ने मौके पर मौजूद महिलाओं की समस्या को गंभीरता से सुनते हुये जल्द कॉलोनी में सुचारू पेयजल आपूर्ति शुरू करवाने तथा दोषी कार्मिकों के विरुद्ध कार्यवाही के आश्वासन के बाद महिलाओं ने जाम हटाया।



पंडित अनिल शर्मा

राशिफल

सोमवार 24 जून, 2024

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, उतराषाढ़ा नक्षत्र दिन 3:54 तक, ऐन्द्रियन योग दिन 11:15 तक, वणिज करण दिन 2:15 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेघ, बुध-मिथुन, गुरु-वृष, शुक-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज सर्वाथ सिद्धि योग दिन 3:54 से सूर्योदय तक है। श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:21 तक, शुभ 9:03 से 10:46 तक, चर 2:11 से 3:54 तक, लाभ-अमृत 3:54 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:20

मेघ व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लगेगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी संभवतः बनी रहेगी। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

मिथुन चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बने कार्य विगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा।

कन्या आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी।

तुला घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बन्ने लगेगे। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बन्ने लगेगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।